

ल्हासा की ओर

पाठ का सार

इस पाठ में राहुल जी ने अपनी पहली तिब्बत यात्रा का वर्णन किया है जो उन्होंने सन 1929-30 में नेपाल के रास्ते की थी। चूँकि उस समय भारतीयों को तिब्बत यात्रा की अनुमति नहीं थी, इसलिए उन्होंने यह यात्रा एक भिखमंगो के छद्म वेश में की थी।

लेखक की यात्रा बहुत वर्ष पहले जब फरी-कलिङ्पोङ् का रास्ता नहीं बना था, तो नेपाल से तिब्बत जाने का एक ही रास्ता था। इस रास्ते पर नेपाल के लोग के साथ-साथ भारत की लोग भी जाते थे। यह रास्ता व्यापारिक और सैनिक रास्ता भी था, इसीलिए इसे लेखक ने मुख्या रास्ता बताया है। तिब्बत में जाति-पाँति, छुआछूत का सवाल नहीं उठता और वहाँ औरतों परदा नहीं डालती है। चोरी की आशंका के कारण भिखमंगो को कोई घर में घुसने नहीं देता नहीं तो अपरिचित होने पर भी आप घर के अंदर जा सकते हैं और जरूरत अनुसार अपनी झोली से चाय दे सकते हैं, घर की बहु अथवा सास उसे आपके लिए पका देगी।

परित्यक्त चीनी किले से जब वह चले तो एक व्यक्ति को दो चिटें राहदारी देकर थोड़ला के पहले के आखिरी गाँव में पहुँच गए। यहाँ सुमति (मंगोल भिक्षु, राहुल का दोस्त) पहचान तथा भिखारी होने के कारण रहने को अच्छी जगह मिली। पाँच साल बाद वे लोग इसी रास्ते से लौटे थे तब उन्हें रहने की जगह नहीं मिली थी और गरीब के झपड़ी में ठहरना पड़ा था क्योंकि वे भिखारी नहीं बल्कि भद्र यात्री के वेश में थे

अगले दिन राहुल जी एवं सुमति जी को एक विकट डाँडा थोड़ला पार करना था। डाँडे तिब्बत में सबसे खतरे की जगह थी। सोलह-सत्रह हजार फीट उंची होने के कारण दोनों ओर गाँव का नामोनिशान न था। डाकुओं के छिपने की जगह तथा सरकार की नरमी के कारण यहाँ अक्सर खून हो जाते थे। चूँकि वे लोग भिखारी के वेश में थे इसलिए हत्या की उन्हें परवाह नहीं थी परन्तु उंचाई का डर बना था।

दूसरे दिन उन्होंने डाँडे की चढ़ाई घोड़े से की जिसमें उन्हें दक्षिण-पूरब ओर बिना बर्फ और हरियाली के नंगे पहाड़ दिखे तथा उत्तर की ओर पहाड़ों पे कुछ बर्फ दिखी। उतरते समय लेखक का घोड़ा थोड़ा पीछे चलने लगा और वे बाएं की ओर डेढ़ मील आगे चल दिए। बाद में पूछ कर पता चला लङ्कोर का रास्ता दाहिने के तरफ तथा जिससे लेखक को देर हो गयी तथा उसुमति नाराज हो गए परन्तु जल्द ही गुस्सा ठंडा हो गया और वे लङ्कोर में एक अच्छी जगह पर ठहरे।

वे अब तिङ्री के मैदान में थे जो की पहाड़ों से घिरा टापू था सामने एक छोटी सी पहाड़ी दिखाई पड़ती थी जिसका नाम तिङ्री-समाधि-गिरी था। आसपास के गाँवों में सुमति के बहुत परिचित थे वे उनसे जाकर मिलना चाहते थे परन्तु लेखक ने उन्हें मना कर दिया और ल्हासा पहुंचकर पैसे देने का वादा किया। सुमति मान गए और उन्होंने आगे बढ़ना शुरू किया। उन्होंने सुबह चलना शुरू नहीं किया था इसीलिए उन्हें कड़ी धूप में आगे बढ़ना पड़ रहा था, वे पीठ पे अपनी चीजे लादे और हाथ में डंडा लिए चल रहे थे। सुमति एक ओर यजमान से मिलना चाहते थे इसलिए उन्होंने

बहाना कर शेकर विहार की ओर चलने को कहा। तिब्बत की जमीन छोटे-बड़े जागीरदारों के हाथों में बँटी है। इन जागीरों का बड़ा हिस्सा मठों के हाथ में है। अपनी-अपनी जागीर में हर जागीरदार कुछ खेती खुद भी करता है जिसके लिए मजदूर उन्हें बेगार में मिल जाते हैं। लेखक शेकर की खेती के मुखिया भिक्षु न्मसे से मिले। वहाँ एक अच्छा मंदिर था जिसमें बुद्ध वचन की हस्तलिखित 103 पोथियाँ रखी थीं जिसे लेखक पढ़ने में लग गए इसी दौरान सुमति ने आसपास अपने यजमानों से मिलकर आने के लिए लेखक से पूछा जिसे लेखक ने मान लिया, दोपहर तक सुमति वापस आ गए। चूँकि तिङ्गरी वहाँ से ज्यादा दूर नहीं था इसीलिए उन्होंने अपना सामान पीठ पर उठाया और न्मसे से विदा लेकर चल दिए।

सुमति का परिचय - वह लेखक को यात्रा के दौरान मिला जो एक मंगोल भिक्षु था। उनका नाम लोब्जङ्गशेख था। इसका अर्थ है सुमति प्रज्ञ. अतः सुविधा के लिए लेखक ने उसे सुमति नाम से पुकारा है।

लेखक परिचय

राहुल सांकृत्यायन

इनका जन्म सन 1893 में उनके ननिहाल गाँव पन्दाह, जिला आजमगढ़, उत्तर प्रदेश में हुआ। इनका मूल नाम केदार पाण्डेय था। इनकी शिक्षा काशी, आगरा और लाहौर में हुई। सन 1930 में इन्होंने श्री लंका जाकर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया। सन 1963 में इनका देहांत हो गया।

प्रमुख कार्य

मेरी जीवन यात्रा (छह भाग), दर्शन-दिग्दर्शन, बाइसवीं सदी, वोल्गा से गंगा, भागो नहीं दुनिया को बदलो, दिमागी गुलाम और घुमक्कड़ शास्त्र।

कठिन शब्दों के अर्थ

1. डाँडा - उँची जमीन
2. थोङ्ला - तिब्बती सीमा का एक स्थान
3. भीटे - टीले के आकार सा उँचा स्थान
4. कंडे - गाय-भैंस के गोबर से बने उपले
5. थुक्पा- सत्तू या चावल के साथ मूली, हड्डी और माँस के साथ पतली लेइ के तरह पकाया गया खाद्य पदार्थ।
6. गंडा - मंत्र पढ़कर गाँठ लगाया हुआ धागा या कपड़ा
7. भरिया - भारवाहक
8. दोनिक्वकस्तो - स्पेनिश उपन्यासकार सार्वेण्टेज के उपन्यास 'डॉन क्विक्जोट' का नायक।